दर्द के दस्तावेज



धरती प्रकाशन
गंगाशहर बीकानेर

दर्द के दस्तावेज

(समसामयिक राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक विषमताओं
तथा यातना संदर्भों से जुड़ी मनःस्थिति से उत्पन्न गज़लें)

प्रकाशक : धरती प्रकाशन गंगाशहर बीकानेर (राज०)/संस्करण 1978/
मूल्य पन्द्रह रुपये/मुद्रक : विकास आर्ट प्रिंटर्स गली नं. 17, [illegible] दिल्ली [illegible]

DARD KE DASTAVEZ (Gazalen) Sanwar Daiya Price 15.00

आत्मकथ्य

खण्डित स्वप्न : दंशित संवेदन

मैं जो कुछ कहूँगा सच कहूँगा और सच के सिवाय कुछ नहीं कहूँगा। हाँ तो सुनिये—

सपने देखना आदमी की कमजोरी है लेकिन क्रूर यथार्थ की दुनिया में सपने टूटते रहते हैं। सपनों का बन बन कर टूटना यातनाजनक होता है। न जाने कितने समय से सुखद एवं सुरक्षित भविष्य का स्वप्न बार बार टूटता रहा है। स्मृतियों का लम्बा सिलसिला। तारा वर्षों की लम्बी यात्रा। यात्रा में कई पड़ाव। हर पड़ाव पर बदलते दृश्य।



१५ अगस्त, १९४७!

स्वाधीनता दिवस। परतन्त्रता से मुक्ति। सदियों से स्वतन्त्रता का स्वप्न देख रहे भारतीयों के लिए स्वर्णिम दिवस। देश के सम्मान और स्वाभिमान का प्रतीक तिरंगा। अपना संविधान। मौलिक अधिकार। व्यक्तित्व के विकास के लिए अनेक बहुमुखी योजनाएँ।

खुली हवा और खुला आकाश। हवा में गूँजती ये पंक्तियाँ—

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा!

फिर कई उतार चढ़ाव। कई आक्रमण। राजनीतिक उथल-पुथल।
और फिर—

२६ जून १९७५।
देश में आपातकाल की घोषणा। अध्यादेश दर अध्यादेश। अनेक राजनीतिक दलों पर प्रतिबंध। समाचार पत्रों पर सेंसरशिप।
चारों तरफ गिरफ्तारियों का वातावरण।
अनेक व्यक्तियों द्वारा आपातकाल का समर्थन। देश में व्याप्त अराजकता और अस्थिरता के लिए एक अनिवार्य कदम। कर्तव्यच्युत कर्मचारियों को नींद से जगाने के लिए चटका। जनकल्याण के लिए प्रधानमंत्री द्वारा बीस सूत्री कार्यक्रम की घोषणा।
अनेक व्यक्तियों द्वारा आपातकाल का विरोध। प्रजातंत्र के दामन से कभी न धुलने वाला धब्बा। मौलिक अधिकारों का हनन। प्रेस सेंसरशिप अप्रजातांत्रिक एवं अमानवीय। तानाशाही का नग्न नृत्य। जबरन नसबंदी। सन्देहमात्र पर गिरफ्तारियाँ।
और फिर—

मार्च १९७७।
लोक सभा चुनाव। कांग्रेस सरकार का पतन। जनता पार्टी की बहुमत से विजय। दूसरी आजादी का नारा। मुक्ति दिवस का उत्सव। नागरिक अधिकारों की पुनःस्थापना। प्रेस सेंसरशिप समाप्त करने की घोषणा।
समस्त देशवासियों को सुखद भविष्य की आशा।
जाँच आयोगों का लम्बा सिलसिला।
और अब जनता पार्टी में आंतरिक मतभेद। विघटन के आसार।
इस लम्बी यात्रा के बीच मन में अनेक प्रश्नचिह्न? उत्तर की तलाश में भटकता मन। सपने देखता मन। सपनों के टूटने से यातना झेलता मन। यातनाग्रस्त मन का दंशित संवेदन। दंशित मन की अभिव्यक्ति के लिए निरंतर छटपटाहट। इसी छटपटाहट का परिणाम दर्द के दस्तावेज।

□

पता नहीं क्यों मुझे बार बार यह लगता है कि हम अनेक बार कई निर्णय

इतनी शीघ्रता म ए लेत हैं कि बाद मे हम उन्हा के लिए शर्मिन्दा होना पडता है। यही कारण है कि आदमी का गला घाटकर, जूता के जोर फर्शी-सलाम करवा, डण्डा के बल अन्द की भुना म घटा करन वाली स्थितिया का हमने अनुशासन पव का नाम बडे गव स दिया था। हम भल गये कि लाख लाख कोशिशा के बावजूद अँधेर को रोशनी की शक्ल म खडा नही किया जा सकता।



लगता है हम स्वागतप्रिय हैं।
हमने स्वतत्रता का स्वागत किया। स्तुत्य रहा।
हमने आपातकाल का स्वागत किया। पछताये।
हमने दूसरी आजादी का स्वागत किया। मूल स्थितिया म कोई विशेष परिवतन नहीं हुआ तो फिर सोच म पडे हैं।
हमने जाच आयोगा के गठन का स्वागत किया। परिणाम और उस पर होने वाली कायवाहिया देख कर हैरान हैं।
हम किसी भी परिस्थिति का स्वागत करने स पहले उसके अच्छे और बुरे पहलुआ पर गम्भीरता स विचारना कब आरम्भ करेंगे ?



पिछले दिना आपातकालीन साहित्य का बहुत बोलबाला रहा।
कायरो और टायरो की खूब चर्चा हुई। वास्तव म यातना सहने वाले भी सामने आये और अँगुली कटवाकर शहीदा की सूची म शामिल होनेवाले भी। कठपुतलिया भी अपने तेवर अब दिखा रही हैं और नये दरबार म नया नत्य पेश कर रही हैं।
कहते हैं कुछेक समयज्ञा ने पुरानी डायरिया खरीदी। उन डायरिया अट्ठारह महीनो के यातना शिविर का आखो देखा हाल लिखने लगे। साथ ही अपनी वीरता की गाथाएँ भी।
कुछेक स्वर निरतर साधनारत थे। भवानीप्रसाद मिश्र त्रिकाल सध्या करते थे। कहते हैं चार कौवे उफ चार हौवे एक पत्रिका को (भाग पर) भजी और

स्वीकृति मिलने पर सम्पादक की समझ पर पुनर्विचार कर उसे समझाया कि बच्चा के स्तम्भ के लिए भेजी यह कविता कितनी खतरनाक है।

समझ मे न आने तब ही कविता मजा देती है? समझ म आते ही खतरनाक बन जाती है। कविता को हथियार बनाना है तो उस समय म आने योग्य भी बनाना होगा।

अमूतता और सपाटबयानो के प्रश्न इन्ही सदर्भों म जाचे परखे जाने चाहिए मेरा एसा विश्वास है।



अपनी इन रचनाओ क बार म कहना चाहूगा कि ये न तो कही से पुरानी डायरी खरीद कर लिखी गयी है और न ही किसी त्रिकाल सध्या के रूप म। आजादी की खुली हवा म भी दद के दस्तावेज तयार हुए हैं और इक्कीस महीना के दम घोटू वातावरण म भी। कुछ रचनाए दूसरी आजादी की हवा म भी लिखी है। दद पहुँचाने वाले क्षण जब भी आये हैं वे कुछ न-कुछ दकर ही गय है।

रचना की अस्वीकृति सामान्य बात है। लेकिन खद क साथ अभिवादन का जो छद्म है वह विचार योग्य है।

इन शरीफो की भाषा के पेंच दखो।
भेज रहे अभिवादन सहित खद दखो।

[अभिवादन सहित खेद व्यक्त करना वसा ही है जस कि विमान जलकर राख हो गया और बचाव काय चालू ह वाले समाचार।]

लोकनायक की निरतर उपक्षा और राजनीति के क्षेत्र म घुटना के बल चलना सीखने वाले को युवा हृदय सम्राट क रूप म स्थापित करने की घटनाए हृदय म नश्तर सी चुभती रही और कागज पर य पक्तिया उभर आयी—

आलम मे आफताब तो है चिराग सहरी।
आपके चिराग अब आफताब हो रहे हैं।

लेकिन स्पष्ट कर दू कि इस यातना के साथ किसी प्रकार के भूमिगत साहित्य का फतवा नही है। जसे राह चलते हुए पाँव म कील चुभने पर दद होता है वस ही उन बड बडे पोस्टरो को देखकर हुआ था।

गलत और निरथक परिणाम वाली घटनाए सदा यातना पहुचाती रही है। फिर

वे चाहे आपातकाल से पूर्व की हों या पश्चात की अथवा स्वयं आपातकाल की। दर्द जब भी हुआ, मुखरित होकर रहा।
राजनीति में हवा का रुख देखकर चलने वालों के लिए—

देखत चलत पलड़ा किधर भारी,
कभी इधर तो कभी उधर गये लोग।

और उधर मूल समस्याओं से हटकर जांच आयोगों में मग्न व्यक्तियों को देखकर जो दर्द हुआ, वह यह है—

दर्द देख कर रोज नये जांच आयोग,
शायद कुछ दिन और बहल जायेंगे लोग।

ये रचनाएँ जब 'कल्पना' की आशा के आगे से निकली तो वे रसीद बुक लेकर आ पहुंचे और 'प्रगतिशील लेखक संघ' का सदस्य बना ले गये। मेरे लिए जो दर्द छोड़ गये वह यह था—

मंच पर घोषित हुआ प्रगतिशील,
घर में पुराने रिवाज चालू हैं।

घर का जिक्र आया है तो उससे जुड़ी यातना भी सामने रख दूं। अशिक्षा और जड़ संस्कारों की हवा में नये मूल्य क्या अर्थ रखते हैं, कहने की आवश्यकता नहीं है। मैंने वहां उगती हुई आवश्यकताएँ और साधनों की अल्पता देखी है। स्थान का अभाव इस हद तक कि मिलने आये व्यक्ति के साथ बैठकर बात करना दूभर। किसी के आते ही उसे लेकर होटल की तरफ लपकना पड़ता है। शर्मिन्दगी का यह सिलसिला आज भी विद्यमान है।
शायद इसी स्थान के अभाव ने कहानियों से कविताओं की ओर लौटा दिया है। कहानियाँ पूरी बैठक मांगती हैं। इनके लिए एक भी एकांत कोना नहीं है। कविता तो छत पर टहलते हुए या घर के सामने लगे नीम के वृक्ष को ताकते हुए उपजे तो उसे सहेजा जा सकता है और रास्ते चलते स्फुरित विचार को डायरी में लिखकर भी।
लगता है सिर्फ सुविधाएँ ही नहीं, असुविधाएँ और अभाव भी अपना रास्ता खोज लेते हैं।

☐

जब-जब भी इन रचनाओं से फिर फिर गुजरता हूं तो लगता है कि इनके मूल

स्वर म कोई विशेष अतर नही है । घूम फिर कर वही वही सन्दर्भ उजागर होते रहे हैं । इसका अर्थ क्या यह तो नहीं कि हमारे जीवन की मूल परिस्थितियों म मोटे रूप स कोई विशेष परिवर्तन नही हुआ है —स्वतन्त्रता के तीस वर्ष बाद भी! आम आदमी के सामने हर रोज जीने मरने का सकट विद्यमान है । जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की अपूर्ति से उत्पन्न कुठा क्षोभ अविश्वास और हताशा ने जीवन गति को अनेक बार अवरुद्ध किया है । इन समस्याओं के हल न होने के पीछे राष्ट्रीय चरित्र का अभाव स्पष्ट है । कुछेक लोगों न अपने सुख की इमारतें लाखों के दुख पर खडी कर रखी हैं।

वे लोग सचमुच महान हैं जो अपने सुख म दूसरों के दुख तक पहुचते हैं । सुख का त्याग करने वाले बड़े होते हैं । लेकिन मैं अकिंचन व्यक्ति, एक लेखक की हैसियत स अपनी यातना के माध्यम स आपकी यातना से जुडना चाहता हू । जब तक यातनाग्रस्त व्यक्ति हैं, तब तक यह जुडाव की प्रक्रिया निरतर रहेगी । जिस दिन सभी व्यक्ति यातना मुक्त हो जायेंगे उस दिन मौसम की बातें अच्छी लगेंगी । चांद-तारों की बातें करने का आनन्द आयगा । फूलों की सुगन्ध स्फूर्ति का सचार करेगी । हवाओं म लहराते आँचल को पकडने के लिए गीत फूटेंगे ।

लेकिन आज ?

आज तो ये प्रश्न हैं । यह दर्द है । यह घुटन है ।



कुछ स्वीकारोक्तियाँ

मनुष्य के रूप म मनुष्य के प्रति प्रतिबद्धता ही हमारा धर्म है । जो जीवन को सकारात्मक दिशा म गति प्रदान करे वह कहीं भी हो मुझे स्वीकार्य है ।



पक्ष और विपक्ष की भूमिका निरन्तर चुनौती बनकर सामने आती है । हम सुविधाएं प्राप्त करनी हैं अथवा सत्य की अभिव्यक्ति ? सुविधाएं प्राप्त करने वालों और सत्य की अभिव्यक्ति करने वालों की कतार निश्चित रूप स एक नहीं हो सकती । हम सत्य अथवा सुविधा म से किसका चयन करते हैं इसी पर हमारी आगामी भूमिका निर्भर करेगी ।



मैं गजल की बारीकियां नहीं जानता, फिर भी गजलें लिखी है।
मैं गजल 'पश' नहीं कर सकता, सिर्फ पढ़ता हूँ।
कहीं-कहीं गजल के नियमों की अवहेलना भी हुई है।



मधुमति गवाह, यथार्थ, युगदाह, युवा हस्ताक्षर, ललकार तथा अभयदूत आदि पत्र-पत्रिकाओं में कुछेक गजलें प्रकाशित हुई। सराही गयी तो लिखने का हौसला बढ़ा।



और अंत में

इस दर्द के दस्तावेज में सिर्फ मेरा दर्द है तो इसकी कोई सार्थकता नहीं। अगर कहीं आपका दर्द भी शामिल हुआ है तो समझूंगा कि मैं अपने समय की यातनाओं से कटा हुआ नहीं हूँ। आपकी सम्मति की प्रतीक्षा रहेगी।

जेल रोड
बीकानेर (राज०)
३३४००१

—सांवर दइया

अपनी बात

मेरे खातिर सास का एतबार है गजल।
अघरे के खिलाफ तेज हथियार है गजल।

बिचौलिया से बात नही टाल सकते आप,
रू-ब रू जवाब मागने को तैयार है गजल।

रोटी का अर्थ रोटी ही रह गया जनाब,
बदचलन शब्दो से अब खबरदार है गजल।

सिक्को की एवज कैसे रख दें जुबा गिरवी,
हमारे लिए जीने का आधार है गजल।

हवा बंद करने की साजिश करते हैं जो
उन जालिमो के खिलाफ तलवार है गजल।

ठोकर मार कर बच नही सकते आप,
बर्फ का घरोंदा नही, अब अगार है गजल।

कोने मे ले कुछ कहने की जरूरत नही,
जनावेआली ! अब खुला दरबार है गजल।

सिफ अपने ही दो आसुओं का जिक्र नही,
जमाने भर के दद का अखबार है गजल।

फिर फिर पूछिये, लेकिन अपना जवाब यही,
खुली हवा, रोशनी, फस्ले बहार है गजल !

गम हवाओं मे फिर निकला आज अकेला,
सदा की तरह मेरे साथ, इस बार है गजल!



सच कहता हूँ मेरी तकलीफ यही है।
जिस वजह से आज मैंने गजल कही है।

वहा तो लग रहे है शौकिया निशाने,
यहा कदम कदम पर सास सिहर रही है।

आदिम सुविधाओ के नक्शे फल रहे है,
तिल तिल कर वटोरी आग विखर रही है।

हवा तक का रुख बदलने वाली ताकत,
नीले रग मे सकून तलाश रही है।

जिन सूखे होठो के लिए की तपस्या,
वहा पहुचे बिना ही गगा मुड रही है।

□

सोचते थे पखेरू आओ चलें वहीं उड़कर।
पहली उड़ान भरते ही लगा, अच्छे थे घर पर।

यहां तो कोई किसी से बात ही नहीं करता,
कितने अच्छे थे वे लोग जो मिलते थे हँसकर।

बस अपने ही खातिर हो यह सुख भरी जिन्दगी,
लगता है मर जायेंगे इस खुली हवा में घुटकर।

लगता है हर कोने में लगी है आग भारी,
जिसे देखो, कहता है रहना जरा सँभलकर।

हर रोज नया उड़ाने भर क्या हो जायगे,
सभी सोचते हैं यहां माथे पर हाथ रखकर।



इन दरवाजो पर खुशहाली जरा दस्तक दे तो देखू ।
काली कोठरियो तक सूरज जरा किरण दे तो देखू ।

जहन मे अब भी उभरती है तेरे हुस्न की तस्वीर,
रजोगम की मारी दुनिया जरा फुरसत दे तो देखू ।

गुल भी खिलते है बागो मे, पुरवया भी चलती है,
तपती जमी, गम हवाए, जरा राहत दे तो देखू ।

पके धान की सुगध कही जरूर है इस हवा मे,
तलाशे रोटी गये कदम जरा आहट दे तो देखू ।

आकाश के साथ साथ मन मे भी बनते हैं इन्द्रधनुप,
इन बदरग क्षणो से वक्त जरा फुरसत दे तो देखू ।



कैसे कैसे तमाशे दिखा रही रोटियां।
आदमी को सुबह शाम नचा रही रोटियां।

मत पूछो कहां कहां बिके लिबास के लिए,
अब लिबास में नंगापन दिखा रही रोटियां!

भूख ने दिखाये हमको ये करिश्मे आज,
चांद सूरज तक में नजर आ रही रोटियां!

आप ही कहिये, कैसे कोई ख्वाब बुनें,
सोने से पहले हमें जगा रही रोटियां।

किताबों में तलाशें तो शायद मिल जाये,
दुनिया से आदमी अब मिटा रही रोटियां।

□

आज हम दोनों सोच, कुछ ऐसा करें।
हवा मे उड़ना छोड़, जमी पाव धरें।

लौट सकती हैं आज भी सब खुशिया घर,
आओ, मिलकर हम उसे बेनकाब करें!

झख मार कर यही बरसेंगे ये बादल,
अपने भीतर इतनी तपन इकट्ठी करें।

सदा कब रहती है यह आधी-बरसात,
मौसम देख, पर तोल कर उड़ान भरें।

बहुत लड चुके हम अलग अलग लड़ाइया,
मरना ही है तो अब क्यो न साथ मरें!



आपका भी इंतजार है, मिलिये दयानतदारो से।
बडे बड काम हो जाते है बस उनके इशारो से।

जब उनसे मिलने निकले तो बहुत भारी लग रहे थे,
लौटे तो सदा को हलके थे हवा भरे गुब्बारो से।

वातानुकूलित आवासो से लौटकर आये हैं वे,
उनकी आवाज नही खुलेगी पानी के गरारो से।

दवा लाने भेजा था, वे दावत मे शरीक हो गये,
अब वे नही मिलेंगे अपनी बस्ती के बीमारो से।

उनके काम का आदमी कभी भी खाली नही लौटा,
जो मिलने गया, बरी हुआ छोटी मोटी उधारो से।

□

ढेला चाहे मत फेंक, हाथ में तो ले ले।
काम आयेगा कभी साथ में तो ले ले।

यह भी सीख लेगा यहां के तौर-तरीके,
आज इसे अपनी जमात में तो ले ले।

इश्तिहार बना उनके न चिपका चाहे तू,
उनका नाम अपने बीच बात में तो ले ले।

उनको अपनी ताकत का हो जाये अंदाज,
इस बार मुकाबला मैदान में तो ले ले।

तू आग से नहीं, यह आग डरेगी तुझसे,
बस, एक बार अंगारा हाथ में तो ले ले।



सूनी दिखती सडकें, चुपचाप हवाएँ बहती हैं।
कौन समझेगा आज खामोशी भी कुछ कहती है।

मायूस न हो यहा आग की उम्मीद रखने वाले!
लाख चढ़े राख अंगारो मे आच मगर रहती है।

टूट जाते है सदियों से अडिग खडे किनारे भी
तूफान के आगोश म पल लहरें जब बहती है।

पावो तले रौंदने वालो से है गुजारिश यही,
देखो, धरती भी सहने की हद तक ही सहती है।

यह हवा, यह आकाश कद न करो सियासत वालो!
परवाज भरती चिडिया न जाने कब से कहती है।



हम पूछा, हम बतायेंगे जो हुआ वहा।
उठ खड़ा हुआ नहस को कौन-सा मुद्दा वहा।

कहा यही कि नीचे कोसो बिछी है बालू,
लेकिन निकल आया एक मीठा कुआ वहा।

समर्थन मे हाथ उठाने बुलवाया जिन्हे,
सामने तान चने मुट्ठिया यह हुआ वहा।

जलसे से घर पहुचना भी हो गया मुश्किल
बात ही म हवा का रुख ऐसा हुआ वहा।

वे कहते है कोई वारदात नही हुई,
आप चलकर देखें, उठ रहा है धुआ वहा।



आज सरेआम घोषणा कर रहे आप।
नयी सुबह लाने का दम भर रहे आप।

आवाज़ तो आती, लेकिन खुलकर नहीं,
लगता भीतर कहीं जरा डर रहे आप।

न जाने कितने चूल्हे उखड़ जायेंगे,
सोचें तो सही, यह क्या कर रहे आप!

राख हटी तो खिल उठेंगे ये अंगारे,
शौकिया फूंक मार गजब कर रहे आप!

यकीन तो है न भोर के घर जायेगा,
जिस रास्ते में सफर तय कर रहे आप?

□

पीछे हटने का कोई कारण नही जब हम ठीक है।
टूटे बेशक हजार, अगर टूटती आपकी लीक है।

अनजाने मे नही हुआ इन हाथों शुरू यह सिलसिला,
जानते है आदमी को जगाने की सजा सलीब है।

चलो, रात व घर टाग आते है आज यह इश्तिहार,
बस, दो कदम चलने के बाद भोर हमारे करीब है।

जब राख चढ़ अगारो ने सोचा, चलो आख खोलें,
सबसे पहले चल दिये ये वे, जो आपके मुरीद हैं।

कल मैं नही तो किसी और के हाथ मे होगी मशाल,
रोशनी नही बुझ पायेगी, अब इतनी तो उम्मीद है।



यहां सरेग्राम उनकी इनायत अब भी है।
पर दिलो मे ठनी हुई अदावत अब भी है।

अमल हो रहा है आवास योजनाओ पर,
धरती आगन और आकाश छत अब भी है।

वे कहते झूठ बालो तो खिताब दिला दें,
पर क्या करें सच कहने की आदत अब भी है।

घोषणाए तो हो चुकी कर्फ्यू उठने की,
कदम कदम पर मन मे दहशत अब भी है।

शराफत का तो सिर्फ जामा पहना है ऊपर,
सडाध देता तालाबे वहशत अब भी है।



अपनी ज़िन्दगी का हमेशा यह आलम है।
सुबह मिले गमो खुशी, शाम को मातम है।

अब किस नाम से पुकारे इन लम्हो को हम,
अभी थिरकती थी हँसी, अभी आखे नम है।

इस तरह रहे वे हम पर मेहरबान सदा,
महफिल मे मुहब्बत जाहिर, घर मे सितम है।

वे ऐलान कर चुके अब पाबन्दियां नही,
बाहर बेखौफ सभी, भीतर डर हर दम है।

परवाज को उठे परिन्दे गिर गये उसी पल,
इनायते मौसम ज्यादा दुश्मनी कम है।



हालात बड़े अजीब, दिल शाद नहीं।
देखता हू आदमी आबाद नहीं।

वेद औ' कुरान पढ़ने म मशगूल,
जिन्दगी का पहला सबक याद नहीं।

आप फल-फूलें, पर हमे न रौंद,
देखिये हम आदमी है, खाद नहीं।

इसी तरह रहा जुल्म, जोर, जब्र तो,
मिलेगा आदमी इसके बाद नहीं।

खुशहाली कसे हो गया गजल मे,
सबके लिए यहा पानी घास नहीं।

□

देखिये हमसे हुआ है यह कुसूर।
हर बात मे कहा न गया, जी हुजूर!

वे रोयें-हँसें तो हम रोयें हँसें,
हम कभी क्बूल नही ये दस्तूर!

हम चल कर आयें, आप बात न कर,
हमसे सहा नही जाता यह गरूर।

साथ बैठकर हिकारत से न देख,
आप बडे होगे अपने घर जरूर!

आपकी सनक के खिलाफ खडे हुए,
हमे भी आदमी होने का सुरूर!



गिर रहे खून के कतरे देखो।
वे कहते कुछ नही, अरे देखो।

आवाज़ क्या चीख तक बेअसर,
सियासत के लोग बहरे देखो।

कैसे कहें खुलकर अपनी बात,
ज़ुबा पर लगे है पहरे देखो।

नया रग पोत जो आये इधर
इनके पुराने चेहरे देखो।

किसी की कोई थाह न मिल रही,
लोग हुए इस हद गहरे देखो।

□

ऐसी सुविधाओं से घिर गये लोग।
अपने ही भीतर तक मर गये लोग!

देखते चलते पलड़ा किधर भारी,
कभी इधर तो कभी उधर गये लोग!

कैसे सीधे पहुंचे कोई उन तक,
कदम-कदम पर पत्थर धर गये लोग।

सदा साथ रहने के दावे करते,
आओ देखें, आज किधर गये लोग।

उठती लहरें रोके से न रुकेंगी,
हर दौरे खौफ से गुज़र गये लोग।



हवा आयेगी, खिड़कियां खोलो तो सही।
आवाज असर दिखायेगी, बोलो तो सही।

क्या मजाल जो रोक ले बदचलन मौसम,
नाप लोगे आकाश, पंख खोलो तो सही।

लड़े बिना ही हार मानते आये अब तक,
अपने बाजुओं की ताकत तालो तो सही।

जुल्म की हवेलियां ढह जायेंगी खुद ब खुद
एक बार तूफान बनकर डोलो तो सही।

एक नहीं लाखों देंगे साथ तुम्हारा,
अपने भीतर जरा खुशबू घोलो तो सही।



उठ खड़े हुए लोग अत्याचार के खिलाफ
पहला पत्थर लीजिये दीवार के खिलाफ

आपके हैं लेकिन जुल्म के साथ न द
किसी की हो, हम तो हैं तलवार के खिलाफ

खूब जश्न मना रहे उनके बिक जाने प
इधर देखिये, हम खड़े सरकार के खिलाफ

सिक्का सीधा गिरे या उलटा, जीत आपकी
कहीं खेलिये, हम हैं इस किमार[1] के खिलाफ

मकानों के नक्शे औ' जिस्मों की नुमाइश
गैरत बेच बसे हो हकदार के खिलाफ

---

१ जुआ।

गुबार में बहकर किन यादों वाली शाम।
यह तमाशा बनाया किसने किसके नाम ?

जिधर से गुजर गए उधर रही बस्तियां,
ये बात रह—बसन बाम फते बाम!

जिनकी निगाह करम से मिटते फतूर,
उन परिन्दों का तो दूर से सलाम!

अपने नजर आज सम्बन्ध में ढल गये,
हां रह अँधेरे भी रोशनी के नाम!

इसे सारा निजाम में दौर देंगे,
भूल गये हम ये कभी किसी के गुलाम!

□

यही हरामजादा शहर देख तू।
हवाओं में भरा जहर देख तू।

भूल जा यहाँ हुआ था आदमी,
गिद्ध लूटें आठों पहर देख तू।

देखना सुनना कहना सब मना,
सियासत ने किया कहर देख तू।

बेकार बदनाम थी रात यहाँ,
अपने घर काली शहर देख तू।

कैसे होते हैं सपने हलाल
देख सकता आज अगर देख तू।



भीतर और भीतर गये तो देखे ये मंजर।
हर चेहरा मायूस था वहा हर आख थी तर।

दिन भर दौडती हाफती रहती हैं कुछ सासें,
फिर भी देखी नही फस्ले बहार जाती उधर।

कही डेरे डाले बैठी थी धूप सदियो से,
कही छाव चलती मिली दूर से ही बतियाकर।

खुश हुए कल ले इजाजत आकाश नापने की,
आज गिरते पखेरू मौसम के हाथो पिटकर।

पता नही किस दिन के लिए सब चुप बैठे हैं,
हवा की दीवारो पर आकाशी छत लिये घर।

□

चारो तरफ जो ग्राज यहा हो रहा है।
उसे देख हर किसी का दिल रो रहा है।

जो भी ग्रागे ग्राया बेनकाब करने,
ग्रगले ही पल यहा से गुम हो रहा है।

वे मशगूल है ग्रखबारी ग्राकडो मे,
बच्चा पय से दूध के लिए रो रहा है।

पहली परवाज, नीचे गिर रहे परिन्दे,
मौसम इस हद मेहरबान हो रहा है।

ग्राज नही तो कल मिटेगा दौरे जुल्म,
जिस किसी ने कहा हो, गजल गो रहा है।



जो हैं बेरहम, उन पर न कुछ रहम कीजिये।
आदमी के दुश्मनों की खबर अब लीजिये।

खुद फँसे तो गिड़गिड़ाना है आदत उनकी,
हाथ आया वक्त न यूँ ही जाने दीजिये।

आग भड़कते ही भीड़ आयेगी जिसमगर,
तबीयत से इन अंगारों को हवा दीजिये।

फरियाद करते तो हो गया एक जमाना,
अब हलक में हाथ डाल अपना हक लीजिये।

गिरे इमारते-जुल्म, एक ही चोट निडर,
मार का ढंग यही, इतिहास देख लीजिये।



यहां आपके ही लोग आपके खिलाफ हैं।
कुछ होश में आइये, किस भीड़ में आप हैं?

आगे कहां जा रहे आप बिना कुछ देखे,
अंगारे बिछे ऊपर बस जरा सी राख है।

चारों दिशाओं से उमड रही आंधियां,
किसने कहा आपसे आज मौसम साफ है?

गले मिल बेशक लेकिन जरा सँभले,
लोगों की नीयत इन दिनों खराब है।

माला पहना चुके बटोर रहे पत्थर,
लगता उनके मन कोई सुरागात है।



तू यहां के तौर तरीकों से वाकिफ नहीं ।
तेरे लिए उनकी यह बज्म मुआफिक नहीं ।

खून का नाम सुनते ही पसीना आ गया,
तेरा यहां टिके रहना कुछ मुनासिब नहीं ।

अभी से हाथ पांव फूल रहे आगे सोच,
यह पहली वारदात है, खुदा हाफिज नहीं ।

तेरे भीतर अभी जिन्दा है एक आदमी,
तुझको दिखेगी कदम कदम पर दोजख यहीं ।

सिर्फ दरिन्दों की खातिर रखे हैं ये खिताब,
आदमी का देख यहां कोई आशिक नहीं ।

□

भीतर उठ तो नश्तर सी याद होती हैं।
बाहर निकलने हो अब वारदातें होती हैं।

जलसे मजते हैं यहा, हम वे रू ब रू हो,
कपे मिल, जब बीच तनी कनातें होती हैं।

उनको हमारी मुहब्बत का है यह रूप नया,
जहा मिले, पत्थरो से मुलाकातें होती है।

जिस दिन स शुरू किया खेल अगारो का, सुना है—
उनकी बज्म मे अब हमारी बात होती है।

सूरज हा भरे आने की, और फिर भोर न हो,
बता, ऐसी कौन सी काली रात होती है?



राख हटी तो अब हुए शोले लोग।
आज है अपनी ताक़त तोले लोग।

चारों तरफ़ उठ रही हैं आवाज़ें,
लगता कई दिनों बाद बोले लोग।

फ़ितरत वही है सदा डसने वाली,
आये हैं फिर बदलकर चोले लोग।

उनको कहते आग लगा देंगे हम,
कितने मायूस, कितने भोले लोग।

ख़ुद देखें, न देख, लेकिन हो भोर,
घूम रहे हैं लिये हथगोले लोग।

□

आपका शहर देख सदा सोचा करते है।
कब ठहरते हैं लोग, कब बात किया करते है ?

दूर से देखते ही रास्ता बदल लेते,
यहा दोस्त ऐसे भी मिला करते है।

रोशनी मे लगा नुमाइश नगे जिस्मो की,
फिर उनको कीमती लिबास दिया करते हैं।

यहा वहा उठती इमारतो के मालिक,
कितने अरमानो को दबा दिया करते हैं।

चीखते सायरन औ' चौतरफ फला धुआ,
ऐसे माहौल मे कसे जिया करते है।



चाहे सिर कलम कर दीजिये।
नहीं होंगे अब चुप लीजिये।

हमने तो सिर्फ सच कहा था,
हम पे हो रहा शक लीजिये।

जिनके बूते दम भरें आप,
उनके चेहरे फक्‌ लीजिये।

खुश हो रहे बहुत दूर निकल,
यहां भी हाजिर हम लीजिए।

चारों ओर फैलेगी आग,
शोलों को हवा अब दीजिये।

□

दौड रहे है और हाफ रहे हैं लाग।
झूठे दिलासे फिर बाट रहे है लोग।

भीतर-बाहर हर तरह से पिट है जो,
घूम फिर उनको ही डाट रहे हैं लोग।

गरूर बढा इतना कि रौंदा धरती को,
आकाश पर चढ अब काप रहे है लोग।

मिलते ही गला पकडने की कहते थे,
अब सामने बगलें भाक रहे हैं लोग।

अब कौन करेगा किसी का यकीन यहा,
जहा भी देखा बन साप रहे है लोग।

□

वहां दूर क्यों खड़े हैं, पास आइये।
अब सारे सबूत लेकर साथ आइये।

आप कहते हैं यहां भोर होगी नहीं,
मान लेंगे सूरज की लाश दिखाइये!

हर कोई डूब रहा इस घाट पर आज,
सुनिये, यहां पहरे कुछ खास लगाइये!

बात करने की तमीज़ भी सीख लेंगे,
इतनी दूर क्यों रखा, पास बुलाइये!

कुछ सामें सलीब पर भी नहीं झुकेंगे,
वहां बैठे आप बस कयास लगाइये!



आज हवाओं में जहर फना हुआ।
आदमी के हाते यह वेजा हुआ।

अंधेरों की बात कोई नयी नहीं,
यह दौर ता है अपना देखा हुआ।

अब जरूरत नहीं दलील देने की,
जानते पासा किसका फका हुआ।

आपके भेजे फल चखे प्यार से,
आज पूरी बस्ती को हैजा हुआ।

आग लगी है तो अब किसे जगायें,
हर कोई करवट बदल लेटा हुआ।



रोज मरता है सूरज, फिर भी सवेरा होता है।
जो कोई देखता इस तरह, शायर होता है।

आजकल बहुत गमगीन है सूरत जमाने की,
इस पत के नीचे खुशी का आलम होता है।

सुबह शाम रोटी को तरस रही आंखों में भी,
जब सपने उभरते, वहां ताजमहल होता है।

जितना ही अधिक गहराता है रात का आंचल,
दुनिया को भोर के करीब ला रहा होता है।

भूल करेंगे खामोशी को समझ अपनी जीत
तूफां से पहले सन्नाटा हर तरफ होता है।



चूमने चले नजर आसमान की देख।
अब हिल रही नींव उसी मकान की देख।

कौन सुनेगा घायल चिड़िया की पुकार,
सभी को पड़ी है अपनी जान की देख।

सच कहने वालों का सिर कलम हो रहा,
यही है उनके वक्त की वानगी देख।

हमारी तकलीफों का जिक्र करे कौन,
मंच पर जम रही बात खानगी देख।

किसी सूरत में न बचेंगे महल उनके,
खुल गयी है अब आंख तूफान की देख।



आसमा मे कोई धुधला सितारा होगा।
तलाशे भोर का जनमो से मारा होगा।

पहली नजर पडते ही मिटते वजूद यहा,
माहौले खौफ मे कैसे गुजारा होगा!

हसरते दीदार वाले पिटकर लौटे हैं,
कल जलसा यहा फिर कैसे दुबारा होगा!

फस्ले बहार माग रही है अब कुर्बानी,
मर मिटने वालो मे नाम हमारा होगा!

प्यासे दम तोडते मिले गगा के किनारे,
हमने कब सोचा यहा यह नजारा होगा!

□

जिस दिन से क्या सच कहने का बीड़ा उठाया है।
हमारे खिलाफ हर रोज नया शगूफा आया है।

न सुन सके झूठ तो आप उठ खड़े हुए लोग वहां,
वे कहते—जलसे में पत्थर हमने फिंकवाया है।

पेट की फटकार सुन सब चल पड़े छीनने रोटी,
वे कहते—उन भूखों को हमने ही उकसाया है।

दाव बढ़ा तो यहां-वहां खुद ही फूट पड़े गुब्बारे,
वे कहते—इस घर में बारूद हमने बिछाया है।

सदियों से सोये समुद्र ने तोड़ डाले किनारे
वे कहते—हमारी वजह से यह बवाल आया है।



आपने पुकारा, आ गये हम लीजिये।
ठेठ तक चलेंगे अब साथ हम लीजिये।

आइये, अब अगले सफर की बात कर,
तय हुए सफर का न कोई गम कीजिये।

कुछ देर और हो बेशक, चलेंगे साथ,
हाँफ गये तो यहाँ थोड़ा दम लीजिये।

आपकी हँसी में साथ दिया था हमने,
खुशी से लेंगे, अपने सब गम दीजिये।

कल जो होगी भोर, आपकी होगी,
मिटना है तो आज मिटते हम लीजिये।

□

मत पूछिये, कसे कसे ख्वाब लिये घूमता है वह।
सब इतना जानता हू, एक आग लिये घूमता है वह।

सलीब, जहर, फासी, गोली जी भरकर दो दुनिया वालो,
छेनियो मे न कटने वाली साम लिये घमता है वह !

मजहबी किताबो से खौलते खून वालो, गौर करो,
कौन है, आदमी होने का दाग लिये घूमता है वह।

किस तरह, किस वजह गिरा है आदमी का खून बताइये,
चुकता करके ही रहेगा, हिसाब लिये घूमता है वह।

कारण तो बताइये, बेवजह क्या है यहा पाबंदिया,
सासो को मुक्त करो ! यह आवाज लिये घूमता है वह।



सच यह उनके लिए डर हो गये हम ।
उनकी नजरो म जहर हो गये हम ।

जलसे मे जब चली बात राशन की,
वहा लेकर भूख मुखर हो गये हम ।

हरे चश्मे बटते देखे जब वहा,
शीशा तोडते पत्थर हो गये हम ।

हवा तक जब कैद होने लगी वहा,
ले सबको साथ बाहर हो गये हम ।

कब तक नही टूटेंगे ये किनारे,
साथ जुड उछलती लहर हो गये हम ।



वही ढंग, वही हिसाब चालू है।
किसने कहा मिटा, आज चालू है।

हकीम के हाथों खिलौना सांसें,
मर्ज़ पता नहीं, इलाज चालू है।

मंच पर घोषित हुआ प्रगतिशील,
घर में पुराने रिवाज चालू हैं।

सही शब्द तो वहीं कहीं खो गये,
बस, अर्थहीन आवाज़ चालू है।

निष्पक्षता के हामी रहे इतने,
मौका मिले तो लिहाज चालू है।



बढ रही बगावत तो देखिये आप ।
हो रही कयामत तो देखिये आप ।

भोर तक जलने की ठान बैठा है,
दिये की शहादत तो देखिये आप ।

हवेलियो के खिलाफ खडे हुए है,
तिनको की ताकत तो देखिये आप ।

अभेद्य दुग ढहाने चल पडी है,
हवा की हिमाकत तो देखिये आप ।

अब फौलाद भी पिघल उठेगा यहा,
आग की अदावत तो देखिये आप ।



होती पहले ही यदि आपकी नीयत साफ।
सच जान, इतने लोग नहीं होते खिलाफ।

उस वक्त तो नहीं किया था जरा भी खयाल,
सभी गलतियां अब कबूलने चले हैं आप।

आपको देखते ही ताजा हो रहे जख्म,
बहुत ही मुश्किल है, अब कर दें बिल्कुल माफ।

आजादी में यह इजाफा आपके हाथों,
अंधेरा दिखाया जिसने भी मांगा जवाब।

किले ढहने के अलावा आपके साथ भी,
वही होगा जो इतिहास में लिखा है साफ।



हर घर मे सडाध दती नाली है।
बता, यह जिन्दगी है या गाली है।

पीक की तरह थूकने पडे उसूल,
पैबन्द भरी सत्य की दुशाली है।

बता, कौन-सा मुह ले भ्रब घर लौट,
हर चेहरा भ्राज वहा सवाली है।

इस तरह कौन चाहेगा अब जीना,
मर कर जीने की भ्रादत डाली है।

न देना रहा, न लेना बचा बाकी,
बाहर भीतर सब बिलकुल खाली है।



चीख उठे जब देख यहा वहा बनी लकीर हम।
सभी लोगो की नजरा म हो गये कबीर हम।

रूढियो ने जब सास को लहूलुहान किया तो,
वहा से निकल आये झझावातो को चीर हम।

हर सास घुटती है, यहा हवा तक नही आती,
बदलने चले इस दुनिया की सूरत अधीर हम।

आज तक एक हवेली तो खडी कर ही लेते,
जिन्दगी समझने की सनक मे हुए फकीर हम।

यहा आकर लौट चलना, सुनो है सम्भव सभी,
जब न देख किसी के आगे पीछे जजीर हम।



चलो कुछ बुझे-बुझे ही सही।
मन मे सपने जगे तो सही।

होठ तक न हिले जिनके कभी,
हकला कहने लगे तो सही।

बहुत दृढ बने दुग उनके,
कुछ कुछ ढहने लगे तो सही।

बर्फ बनकर जम चुके थे जो,
रिस रिस बहने लगे तो सही।

झूठ के साथ बहुत नगे थे,
अब कुछ पहने लगे तो सही।

□

चलेंगे, गिरगे, गिरकर सँभल लगे ।
सदा की तरह अपना ही सम्बल लेंगे ।

इतना सफर जब अकेले तय कर लिया,
रहे सहे दो चार कदम भी चल लग ।

गले तक धँसे थे तब भी नही पुकारा,
घुटनो चढे दलदल से खुद निकल लेंगे ।

ढलान मे फिसले तो कोई मिला नही,
समतल मे ये कदम आप सँभल लेंग ।

नही चाहते द्रुम हिलाकर शिखर छूना,
जो लगे, अपनी क्षमता के बल लेग ।



भर आयी आंखें भी नहीं छलकी है कई दफा।
किसने समझा यहां उन आंसुओं का फलसफा।

दुनिया ने देखी है उनकी छाया सदा हम पे,
किसे होगा यकीन, उनके कारण हुआ हादसा।

इस तरफ जो भी बिखरे, रंग बदरंग बिखरे,
दूसरी तरफ अब भी रखा है कोरा एक सफा।

कुछ इस तरह बनकर तयार हुआ है घर अपना,
छांव यहां तक आती नहीं, धूप रहती है सदा।

आपको यकीन हो या न हो, लेकिन सच जानिये,
हाथ ऊपर उठा खुशी से मांगी है आज कजा!



पग-पग पर ढहने की आ त खो गयी अब तो।
सुनो, सच कहने की आदत हो गयी अब तो।

ये सुविधाए अलग न कर सकगी मुझे उनसे,
रगो मे बहने की आदत हो गयी अब तो।

कोने मे छिपकर रोया नही जाता मुझसे,
सरेआम कहने की आदत हो गयी अब तो।

फुटपाथ पर नही आया बस तभी तक डर था,
तूफा से लडने की आदत हो गयी अब तो।

गया वक्त जब दवाओ की थी जरूरत हमे,
हर दद सहने की आदत हो गयी अब तो।



दिख रहे बाहर से तो हम तुम जुडे-जुडे ।
लेकिन भीतर से है बहुत उखड उखडे ।

नापने को नाप लेते हम भी आकाश,
पंख खोलते ही मौसम ने थप्पड जडे ।

इन्तजार की भी तो एक हद होती है,
राखियाने लगे हैं अंगारे पडे-पडे ।

कब समझी हमने तीसरे की चालाकी,
हम तो उम्र भर आपस मे ही मरे लडे ।

सुना है—आज भी गंगा मे तो पानी,
प्यासे होठ लिये उधर तुम, इधर हम खडे ।



पाव तले जमी औ' सिर पर आकाश चाहिए।
जीने के लिए आदमी का विश्वास चाहिए।

बारहो महीने पतझड से निभ नहीं सकती,
घडी भर के लिए ही सही, मधुमास चाहिए।

अंतहीन अंधेरे पथ पर चल पडेंगे, सुनो—
मगर इस सास के साथ कोई सास चाहिए।

जहाँ धूल बुहार बैठ, वही बसा लें बस्ती,
अपने आस पास कुछ पानी, कुछ घास चाहिए।

अकेले वर्तमान से भविष्य बन नहीं सकता,
भूलों से सीखने के लिए इतिहास चाहिए।



आपको सिर्फ अपनी इज्जत का ख्याल है।
हमारे सामने जिन्दगी का सवाल है।

सालभर तो पाला करते बडे प्यार से,
फिर उन्ही हाथो ईद को करते हलाल हैं।

झुकते पलनो को मोर ही मिले हैं सदा,
समय के साथ आप सधे हुए दलाल हैं।

हमारी गति के बीच बने खड्डे-दर-खड्डे,
ये रूढिया तो आपके लिए ढाल हैं।

कही भी बनी हुई लीक आपको कबूल,
अपने सामने हर कदम वही सवाल है।

□

घर मे छिप जाइये, अच्छा रहेगा।
अब हो चुप जाइये, अच्छा रहेगा।

लोगो को पत्थर चुनते देखा है,
अब इधर न आइये, अच्छा रहेगा।

हर घडी लगा है हगामे का डर,
जलसा न लगाइये, अच्छा रहेगा।

हर मोड खडे लोग इतजार मे,
बाहर न आइये, अच्छा रहेगा।

हर आदमी हुआ आज आईना
दूर हट जाइये, अच्छा रहेगा।

□

हमने भूख का यहा ऐसा आलम देखा।
खाली पेट पर पडता पाव जालिम देखा।

रात के घर रची जब दावत बडे ठाट से,
उसम हमने सूरज को भी शामिल देखा।

हमारे घरो तक यह हवा भी नही आती,
उन सभी दयानतदारों से हा, मिल देखा।

बस यू ही जरा टटोल लो आपकी जेबें,
लेना किसे, हमने तो आपका दिल देखा।

हर सास कटती नही मामूली वारो से,
हमने चाकू देखा, चाकू का फल देखा।

□

कभी धरना, कभी घेराव, कभी हड़ताल।
हर रोज लगा है यहा एक नया बवाल!

चारो तरफ हो रहे धमाको पर धमाके,
इस नन्ही चिड़िया को ज़रा जतन से सँभाल।

मेला उठने से पहले भगदौड होगी,
सँभालकर रख, कही गिर न जाये रुमाल।

समझने समझाने का है यह रूप नया,
लाठी पत्थर से आ जा रहे जवाब सवाल।

खून खराबा आदमी के हकों के लिए,
यहा हो रहा आदमी का कितना खयाल!



आज मिलकर खुली हवा में सांस तो लो।
तिनका ही सही, जो भी हो, साथ तो लो।

सुना है इस बस्ती में आये फरिश्ते,
हम भी जानें, कौन हैं वे, नाम तो लो।

तहखाना न पूछें तो अब क्या कहें,
हां, हम देंगे बयान, सरे आम तो लो।

उनका पूरा इतिहास लिखा है इसमें,
फिर पढ़ लेना, अभी पर्चा थाम तो लो।

रात का रूप पाश न रह सकेगा सदा,
निकलेगा सूरज, हिम्मत से काम तो लो।

□

नाम पहुचे उनके, जो खिलाफ हैं।
याद रखिये, उनमे एक आप हैं।

आपके कहने से कौन मानेगा,
आपका चलन नेक और साफ है।

आप वेकसूर साबित नही उनसे,
जिनमे दूसरा के दामन दाग है।

यह वारदात आपके नाम होगी,
जहा खड है आप, वहा आग है।

छूटना है तो और को फसाओ,
यहा का सदा से यही हिसाब है।



ये उम्मीदें कैसे न होगी बदरंग यार !
आदमी खुद खड़ा जहा बिकने को तयार !

उजालो की हद से दूर निकल चुके इतना,
सुबह शाम है सिर्फ अंधेरे का इन्तजार !

देख रहा हू मैं कफ मे गिरता खून यहा
कैसे कहू इनसे नही अपना सरोकार।

जमाने को हँसे एक जमाना बीत गया,
आजकल सूरत से लगता बेहद बीमार।

भूख के आगन से हटाओ ये गदे सिक्के,
गलियो को घर बनाओ बद करो बाजार !

□

आकाश छती इमारत बनाने वाले
सदियो से मिले हमे फुटपाथ के हवाले ।

यह किस्मत बदनाम हुई, आपकी बदौलत,
हाथो की हद से दूर रहते हैं निवाले ।

यहा सभी आते हैं गन्दगी मे डूबने,
इस धधकते नरक से बाहर कौन निकाले ?

ऐसे बढती रही उल्फत अँधेरो से तो,
लाख तलाशें, न मिलेंगे कल यहा उजाले ।

जसे भी हो बदलो बदतर होती सूरत,
खुदगर्ज जमाना, यह सवाल कौन उछाले ?



आज यह क्या हुआ, अखबार हो गये लोग।
देखते ही देखते इश्तिहार हो गये लोग।

गया वह वक्त जब जरूरत थी सहारों की,
आज अपने ही पहरेदार हो गये लोग।

उनको अफवाहों का असर अब क्या होगा,
देखो, खुद तब से खबरदार हो गये लोग।

हवा आयेगी, सोचकर खोल ली खिड़कियां,
उनको क्या मालूम गुबार हो गये लोग।

बहुत खुश थे, चलो बुझ गयी चिनगारियां,
राख के ढेर में फिर अंगार हो गये लोग।



माना आज पहरे नहीं है।
किसने कहा खतरे नहीं है।

चलने का तो बस दम भरते,
हकीकत मे ठहरे वहीं हैं।

चीख तक नही सुनते हैं जो,
बसते लोग बहरे यहीं है।

खबर तक न हो, कर दे हलाल,
लोग इतने गहरे कहीं है।

यह बदलाव, बदलाव कैसा,
लोग नये, पतरे वही है।



जब देंगे हम कुछ वर्षा ग्रौर।
होंग लाग कुछ उन्निया ग्रौर।

यहां से घर दिखने लग गया,
सामने मिलेंगे यहां ग्रौर।

घणावन पे है दबी सांसें,
बचकर जायेंगे कहां और?

यहां बुझ भी तो क्या हुआ,
जल उठी, जो ग्राग यहां और!

दम न घुटे, ताजा मिले हवा,
ग्राग्रो कि बसायें जहां ग्रौर।

□

घायल परिन्दों की इतनी-सी है कहानी देखो।
उनपे हुई थी मौसम की मेहरबानी देखो।

सबको खुश करने का जादू लेकर निकले आज,
अब गली गली हो रहे दौरे तूफानी देखो।

ऐसी हरकतों से हँसा रहे जमाने का आज,
हँसी की जगह आ रहा आँखों में पानी देखो।

सामने खड़े होने वाले देख रहे अँधेर,
जमहूरी सल्तनत की नयी कहानी देखो।

भोर के सभी सपने क्यों हो रहे हलाल यहाँ,
सवाल पूछ लिया हमने, हुई नादानी देखो।



यहा वहा-जहा आपने सिक्के उछाले है।
देखिये, आगे बढ हमने ही सँभाले हैं।

साधु की हो या कसाई की, अपना क्या,
हम तो सिर्फ पोस्टर चिपकाने वाले है।

नतीजे की परवाह किये बिना, आगे बढ—
कोई छेडे, हम तो बहस बढाने वाले है।

अपना विश्वास रहा सदा जिस्म ढकने मे,
फिक्र किसे, चोले सफेद है या काले हैं।

जान चुके, देखिये उनको न छोडेगे अब,
जिनके कारण हाथो से दूर निवाले हैं।

□

यकीन न हो ता चलो देख लो अभी।
हर किसी के भीतर है सूखी नदी।

यह खोफ यह खामोशी अजीब नहो,
उड़कर देख, मौसम बिगड़गा अभी।

सपनो की लाश नहीं देखी तूने,
ताबीर की बातें करता है तभी।

भीतर उठी आवाज, पर सुनी नहीं,
इतना कुसूर तो कर चुके हम सभी।

धीरे ही सही, लेकिन फूंक मारो,
बुझते अंगारे खिल जायेंगे अभी।



जीने का मजा किरकिरा है।
आदमी साँपों से घिरा है।

जाने से पहले सोच ज़रा,
अधे मुए का कहाँ सिरा है?

बस, एक कदम दूर है मौत,
जब से कफ मे खून गिरा है।

सोचा—जलाऊ गदी बस्ती,
दुनिया ने कहा—सिरफिरा है।

वजह की वजह् तलाशें आज,
जिस वजह् हर कोई गिरा है।



आज हर गली मे दगे हो रहे है।
लिबास उतार लोग नगे हो रहे हैं।

किस उम्मीद से लिपटे दौडकर गले,
बाहो मे फासी फन्दे हो रहे हैं।

जब मागी दवा तो दुत्कारा गया,
अब लाश के लिए चदे हो रहे है।

सिक्कों की एवज ले रहे जिन्दगिया,
मतलब के मारे अधे हो रहे हैं।

बनाकर अपना, फिर करेंगे हलाल,
देख, लोग कितने गद हो रहे है।



मुझे न पूछो आज आदमी क्यो रो रहा है।
उसे ढूढो, जिसकी वजह से यह हो रहा है।

चौराहे पे जले न जाने ये चिराग कैसे,
अब सडक पे अँधेरा और गहरा हो रहा है।

आवाज़ क्या, चीख तक नही पहुच रही वहा,
इस निज़ाम का हर आदमी वहरा हो रहा है।

ज़माने का फुरसत नही मिल रही आसुओ से,
उनकी शोहरत की खातिर जलसा हो रहा है।

तुम लेट गये घर की खिडकिया पे तान पर्दे,
क्या वजह फिर मेरे दिल मे दद हो रहा है।

□

देख देख रोज नये जाच आयोग।
शायद कुछ दिन बहल जायेंगे लोग।

पहले से ही बेहद पिटे हुए हैं
चीख मत यहा, दहल जायेंगे लोग।

हर वक्त आग की बातें मत कर तू,
मोम के बने, पिघल जायेंगे लोग।

खुशियो के खिलौने लाओ तो सही,
इन्हे देख खुद बहल जायेंगे लोग।

तिनके पहचान रहे अपनी ताक्त,
आज नही कल कहर ढायेगे लोग।



खिडकिया बद करने लगे जो सभी।
क्या होगा दुनिया का, सोचा कभी ?

चद होठो पे है तवस्सुम तो क्या,
जमाने के अश्को को सोचो कभी !

बद कमरो मे नहीं हकीकते जहा,
सडको पे जो हो रहा, देखो कभी !

अब कौन कहा तक साथ ले-दे रहा,
यह इम्तिहा भी हो जाने दे अभी।

इतना मायूस न हो, उठ फूक मार
राख तले दबे अगारे गम अभी ?



यह माना आकाश मे उडने लगे अब परिंदे।
लेकिन कसे मान ले, लोग नही है अब गदे।

जमाने का सबसे हसीन ख्वाब है रोशनी,
लेकिन हो रहे है फिर वही अँधेरे के धध।

अब भी घुटती है सास यहा, लेकिन क्या कर,
हर किसी को नजर नही आते, ऐसे है फदे।

तेरी गगा के पानी पर गरूर जमाने को
अपने ही घर मे प्यासे मर रहे तेरे बदे।

याद आ रही आज नानी को कहानी जिसम,
राजा का आखें देकर योगी हो गये अध।



जब से बरसों पुराना दर्द बिछड़ा है।
तभी से यह मन बहुत उखड़ा उखड़ा है।

किस्सा ए तबस्सुम कैसे करें हम नया,
अपना तो अश्कों से वास्ता पड़ा है।

घाखो आगे ढह रही इमारत अपनी,
आप कह रहे—ज़रा पलस्तर उखड़ा है।

फलसफे जो भी पढ़े, तेरे साथ पढ़े,
देख ले हर किताब, सफा वही मुड़ा है।

हक न छीनो सरेआम गजल कहने का,
मेरा जीना-मरना गजल से जुड़ा है।

□

कह दो उनसे जो लाखों जुल्म किया करते है।
हम बीज है और बीज बागी हुआ करते है!

आपका तो सहलाना भी तिलमिला देता है
भला ऐसे भी किसी के जख्म को छुआ करते है?

हम तो झुलस रहे एक जमाने से लेकिन अब,
उस आग मे तू भी झुलसे, यह दुआ करते है।

हर गली के हर मोड पर बर्फ फेंकने वालो!
शोले जो भडक उठे यू नही बुझा करते है।

काप उठती हैं हवेलिया जब भूखे फुटपाथ,
हलक मे हाथ डाल हक लेने को तुला करते है!



जब तय किया नहीं चलूंगा लीक पर।
दुनिया वालो—अपना चलन ठीक कर।

वड़े अंदाज से पूछते वे हमको—
क्या पाया इस मौसम को रकीब कर?

आ, अब कारणों के कारण तलाशें,
कब तक रोते रहे सिर्फ नसीब पर?

हर आंगन में हों खुशी के फव्वारे,
जो रहे सिर्फ उस दिन की उम्मीद पर।

कहने को लाखों आराम कर दिये,
मगर हम तो हैं आज भी सलीब पर।



आपका निज़ाम ये चलन आम
जूतो के जोर फर्शी-सलाम हो

सभी जानते हैं फँसेंगे लोग
गवाह तो यहा मुफ्त बप हो।

तवारीख मे भी नही कही ऐसो
अँधेरे मे भी रोशनी के नाम हे

मुकाबले मे जो थे सड रहे
जमहूरी-सल्तनत, इन्तखाब हो

आलमे-आफताब तो है चिरा
आपके चिराग अब आफताब

आपका निज़ाम ये चलन आम हो रहे हैं।
जूतों के ज़ोर फर्शी-सलाम हो रहे हैं।

सभी जानते हैं फँसगे लोग वे कसूर
गवाह तो यहा मुफ्त बदनाम हो रहे है।

तवारीख म भी नही कही ऐसी मिसाल,
अँधेरे मे भी रोशनी के नाम हो रहे है।

मुकाबले मे जो थे खड रहे सीखचो म,
जमहूरी सल्तनत, इन्तखाब हो रहे हैं।

आलमे आफताब तो है चिरागे सहरी,
आपक चिराग अब आफताब हो रहे हैं।

